रिकॉर्ड :– तूने रात गँवाई सोवन के..... ओम् शांति। गीत में भी समझाया हुआ है कि जन्म ब जन्म माला फेरते रहे, राम–2 जपते रहे, धक्के खाते रहे और खाते ही रहते हैं, तो भी भगवान नहीं मिला। भक्त चाहते ही हैं भगवान को। सिर्फ भगवान कहने से तो किसको पता न पड़ा। समझते हैं, भगवान को आना है; क्योंकि यह दुनिया पतित है। हम आत्माएँ असल रहने वाली हैं पावन महतत्व की। यह तो सभी जानते हैं कि इस समय पतित आत्माएँ हैं। अब भगवान को जानना तो डिफीकल्ट बात नहीं। भगवान को कहा ही जाता है गॉड फादर। यहाँ भी ऐसे गाया जाता है परमपिता प०। वो लोग अंग्रेजी में कहते हैं गॉड फादर। हम कहते, परमपिता प०, परे ते परे परमधाम में रहने वाला। यह भी जानते हैं कि गॉड फादर यहाँ नहीं रहता है। हम आत्माओं का परमपिता परमधाम में रहता है। हम आत्माएँ आती भी वहाँ से हैं। अब हम सभी पतित हैं। पावन करने वाले को ज़रूर यहाँ आना है। यह भी जानते हैं कि भगवान अवतार लेते हैं। आए हैं पतित दुनिया को पावन करने। इनको कहा ही जाता है हेविनली गॉड फादर। वो हेविन स्थापन करने आते हैं। पावन दुनिया स्वर्ग को कहा जाता है। ये समझाना तो बड़ा सहज है। गीता भी कहा ..... हुआ, ये सब तो कहते आए हैं। यह सब है भक्तिमार्ग। यहाँ वो कुछ भी नहीं है। बस, चुप रहना है। अणपढ़ है तो बहुत अच्छा है। यह तो सभी कहेंगे कि दो बाप ज़रूर हैं। एक शरीर का बाप, दूसरा आत्माओं का बाप। आत्मा अपने बाप को पुकारती है। भगवान है आत्माओं का बाप। लौकिक बाप से वर्सा मिलता है, तो बेहद के पारलौकिक बाप से भी ज़रूर वर्सा मिलता है। ये बाप स्वर्ग की स्थापना करने वाला है, तो ज़रूर स्वर्ग का वर्सा देंगे। इसलिए इनको आए लायक बनाना है। पावन बनाना माना माया पर जीत पहनना। यह तो बिल्कुल सहज बात है; और घर बैठे भी कोई सिर्फ बाप और स्वर्ग के वर्से को याद करे तो भी पद पाए सकता है; परन्तु फिर योग चाहिए। संग तारे कुसंग बोरे। यहाँ संग में हैं, तो भी घड़ी–2 भूल जाते हैं। जो सर्विस पर रहते हैं उनको तो बाप की याद दिलानी पड़ती है, तो याद रहती है। जो सर्विस नहीं करते हैं, औरों को बाप का परिचय नहीं देते हैं, उनको भूल जाता है। भल मुख से कोई कहे, हम याद करते हैं; परन्तु बाबा मानेगा नहीं। वास्तव में तो ऐसा सहज है जो घर में रह कर भी बाप को याद करे, तो अंत मते सो गते हो जाएगी; परन्तु संग ज़रूर चाहिए, ज्ञान की प्रकाश चाहिए। घर में भी वो साथी हो। वास्तव में ज्ञान तो ऐसा है, जो चुप रहना है और स्वर्ग को याद करना है। एम–ऑब्जेक्ट तो बुद्धि में है कि हम जाकर ल०ना० बनेंगे। ये झाड़ और गोले में जो कृष्ण–राधा हैं, अब वो नहीं देंगे, उसके बदले में ल०ना० को देंगे। अब ल०ना० का अलग चित्र भी बनवाए रहे हैं। तो समझाना सहज होगा; क्योंकि यह ज्ञान है राजाओं का राजा बनाने वाला। तो ये थोड़ी चेंज कर देंगे। ज्ञान की पराकाष्ठा बढ़ती रहती है तो चित्र भी बदलते रहेंगे; क्योंकि वो लोग कृष्ण को द्वापर में ले गए हैं तो कृष्ण का चित्र देने से लोग मूँझते हैं; इसलिए सूर्यवंशी ल०ना० और चंद्रवंशी राम–सीता कर देंगे। कृष्ण का दूसरा चित्र भी अच्छा बना हुआ है– कलियुग विकारी दुनिया को लात मार रहे हैं। बाबा ने समझाया कि भारत में अनेक झूठे चित्र हैं। तो उन चित्रों के सामने सच्चे चित्र देने पड़े और लिख भी सकते हैं। इसमें डरने की बात नहीं। ये तो धर्म की बातें हैं। अधर्मी मनुष्यों को धर्मी बनाया जाता है। मनुष्यों ने उल्टे चित्र बनाए हैं, जो मनुष्य अधर्मी बनते हैं। खास शास्त्रों में बहुत ग्लानि की है। एक/दो की स्त्रियाँ चुराया, तो बहुत स्त्रियाँ भी चुराते हैं। बहुत स्त्रियाँ भी ...ठते हैं। खास बंगाल के तरफ तो साहुकार लोग, बड़े–2 आदमी अपनी स्त्री को छोड़ बहुत स्त्रियाँ रखते हैं। यह तो एक फैशन है, सबके पास रखी हुई हैं। बड़ा आदमी दो–पाँच न रखे तब तक बड़ा आदमी कहा नहीं जाता। इसलिए वे लोग ज्ञान उठाए नहीं सकते। कहते, ये तो बड़ी मंज़िल है। अरे, यह

अन्तिम जन्म पवित्र बनने से प्राप्ति बहुत ऊँची है। समझाने का भी ढंग चाहिए। कोई बच्चे तो सब्स्ट्रक्शन(कन्ट्रक्शन) करते, कोई डिस्ट्रक्शन कर देते। इसलिए बहुत खबरदारी रखनी पड़ती है; परन्तु यह भी भावी है। बाहर के ये हंगामे न हो तो हमारे पास ढेर आ जाते। तुम इतने सेन्टर्स खोल न सको। बड़े–2 आदमियों लिए पवित्र बनना तो बड़ा मुश्किल है। समझते हैं, बड़े–2 ऋषि–मुनि पवित्र न रह सके; तब तो वो भी घर छोड़ भागते हैं। स्त्री नर्क का द्वार है, उसके साथ रह नहीं सकते। यहाँ तो दोनों को (इ)कट्ठा रह स्कॉलरशिप लेनी है। गंधर्वी विवाह का नाम भी यहाँ का है। यह रसम ब्राह्मणों में चलती है। इकट्ठा रह बहादुरी दिखानी है। दोनों (इ)कट्ठे रहे और आग न लगे। माया पर जीत पहननी है ना! जैसे हनुमान का मिसाल है, उनको रावण हिलाए न सका। यह बहुत अच्छा मिसाल है। हम सभी हनुमान हैं। कुछ भी हो, हम हिल नहीं सकते, नहीं तो अपनी राजाई गँवाए देंगे। उन्होंने तो शास्त्रों में क्या–2 बातें लिख दी हैं; परन्तु यहाँ यह बहादुरी दिखानी है, भल इकट्ठे एक पलंग पर सोए; परन्तु बीच में ज्ञान तलवार हो। समझाना है, यह हमको प० सिखाने वाला है। वो कहते हैं, यह अन्तिम जन्म विख न पीना। 63 जन्म तो विख खाए, दुखी हुए, अब तुमको अमरलोक ले चलता हूँ; इसलिए मेरी राय पर चलो। माया तो खूब चक्करी में लाएगी; परन्तु बहादुरी चाहिए। नम्बरवार तो हैं ही। भल माया चोट लगाती है फिर भी पुरुषार्थ तो करना है। ठहर गए तो ऊँच पद कैसे पाएँगे! लड़ाई का मैदान है, इसमें हार–जीत होती है। हाँ, घड़ी–2 हार खाने से रजिस्टर खराब होता है। लड़ाई में भी जखमी होते हैं तो दुख ज़रूर सहन करना पड़ता है। अगर कन्या ज्ञान में है तो माँ–बाप को समझाए सकती है कि हम शादी न करेगी। सगीर को भी मार नहीं सकते। आजकल सगीर को भी शादी कराए देते हैं। भल लॉ नहीं है; परन्तु कोई लॉ नहीं चलता। गवर्मेन्ट में कोई ताकत ही नहीं। रिलीजन न है तो ताकत भी न है। तेरे में रिलीजन की ताकत है तो तुम सारी राजाई लेते हो। रिलीजस आदमी भगवान को याद करते हैं। सर्वव्यापी कहने वाले कोई रिलीजस न ठहरे। हम सब ईश्वर का रूप हैं तो याद किसको करें। अपन को शिवोहम् कह पूजा कराते हैं तो खुद किसको भी याद न करते होंगे। तो वो भक्ति भी न हुई। इसलिए उसको शैतानी कहा जाता है। एक तरफ कहते, प० सर्वव्यापी, फिर अपनी पूजा कराते। क्या पूजा करने वाले प० नहीं हैं? अंधाधुंध सरकार है; इसलिए जिसको जो आता है सो कहलाते हैं। ऐसे कहलाने वालों को ही हिरण्यकश्यप कहा गया है। तुम बच्चों को अब अथॉरिटी मिली है; परन्तु समझाने में रिफाइननेस बहुत चाहिए। बाबा कहना तो ठीक; परन्तु जबकि बाबा का नाम बाला करे। बहुत उल्टा नाम बदनाम करते हैं; इसलिए जास्ती नहीं आते। लॉ भी कहता है, बहुत आने न चाहिए। उतने कौन संभालेंगे! एक–2 कितनी मेहनत लेता है। प्रजा बनना तो बहुत सहज है। वो ... बन रहे हैं। बाकी है राजाई पद। पद तो नम्बरवार हैं ना। बाबा को याद करने से विकर्म विनाश होंगे। भल घर बैठे याद करे। यहाँ रहते जो न पढ़ते, उनसे वो तीखे जा सकते हैं। अणपढ़ और चुप रहना। ज्ञान तो अंदर में है। ये है बुद्धि की चीज़। भक्ति है जिस्मानी चीज़। ये है रूहानी चीज़। बाबा के अंदर में ज्ञान भरा है तब ज्ञान सागर कहा जाता है। तो आकर पढ़ाते हैं। हमारी आत्मा सुनती है। तो हम भी आखिर बाबा जैसे ज्ञान सागर बन जाएँगे। जब तक बाबा पास परमधाम में होंगे तब तक हम भी ज्ञान सागर होंगे। ज्ञान की दरकार होगी, जब तक ट्रांसफर हो देवता बने। प्रालब्ध मिली फिर ज्ञान खलास हो जाता। वहाँ दरकार नहीं रहती। बीज और झाड़ का ज्ञान है बहुत सहज। कोई भी आवे तो बोलो– पहले–2 तो बाप को समझो, जिससे वर्सा मिलता है। जैसे लौकिक बाप का मिलता है वैसे बेहद के बाप का भी मिलता है। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ